हिन्दी अकादमी, हैदराबाद ISSN 2277-9264
यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित पत्रिका (क्रमांक-120)

संकल्य

51 वर्षों से
निरंतर दक्षिण से
प्रकाशित

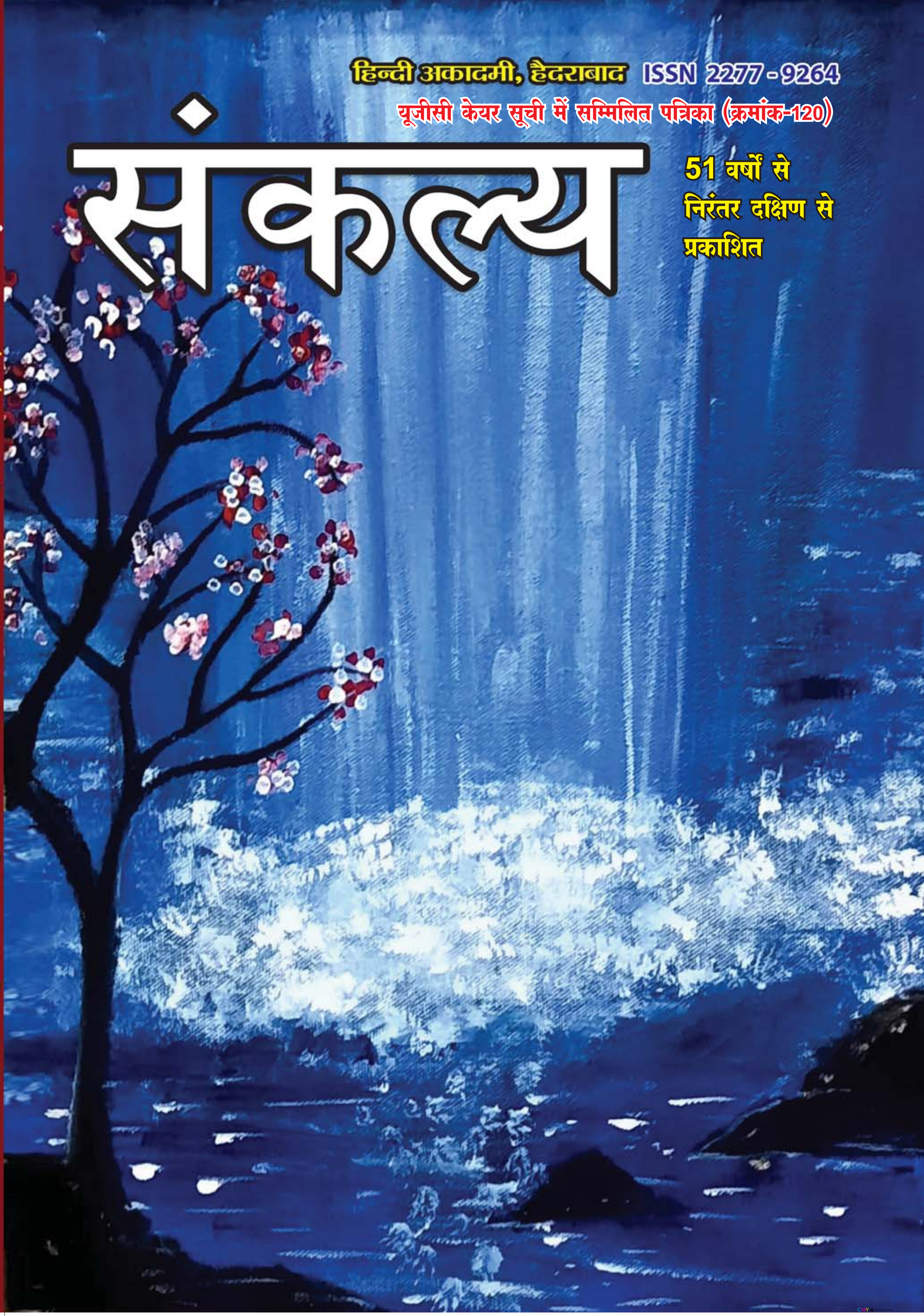

विनम्र श्रद्धांजलि

प्रो. टी. मोहन सिंह जी

(1943-2023)

'जन्म सत्यं ध्रुवं मृत्यु', यह संसार का शाश्वत सत्य है। इस सत्य से कल्मषयुक्त चराचर जगत के हर प्राणी को साक्षात्कार करना पड़ता है। आत्मा अजर है, अमर है और यह देह नाशवान। जिसने जन्म लिया है उसे एक न एक दिन जाना ही होगा। 19 जून, 2023 की सुबह हैदराबाद हिन्दी जगत के भीष्म पितामह संत स्वभावी प्रो. टी. मोहन सिंह जी के हृदयाघात से निधन होने की खबर से न केवल पूरा हैदराबाद, बल्कि देश के कोने-कोने में रहने वाले प्रो. मोहन सिंह जी के मृदुल व्यक्तित्व से परिचित कई दिग्गज स्तब्ध दिखे। सभी के शोक संदेश मिले। 1943 को तेलंगाना के नागरकर्नूल जिले के एक पिछड़े गाँव में जन्मे प्रो. मोहन सिंह जी भारी संघर्ष के बीच हैदराबाद स्थित उस्मानिया विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक के रूप में पहुँचे थे तथा विश्वविद्यालय के कई उच्च पदों पर सेवा देते हुए वर्ष 2003 में सेवानिवृत्त हो गए थे। अपने पूरे कार्यकाल में छात्रवत्सल रहे प्रो. मोहन सिंह जी को गरीबी का दर्द मालूम था। इसीलिए विश्वविद्यालय के हर गरीब विद्यार्थी की मदद उनकी प्राथमिकता रही। उस समय उस्मानिया विश्वविद्यालय के आर्ट्स कॉलेज के प्राचार्य का पद खतरे का पद हुआ करता था। कोई प्राचार्य बनने को तैयार नहीं होता था, किन्तु वही प्रो. मोहन सिंह जी थे, जिन्होंने एक दशक तक निर्भीक रूप में प्राचार्य पद पर कार्य किया। यह उनकी प्रशासनिक दक्षता तथा छात्रवत्सलता का मिसाल है।

साथ ही हिन्दी अकादमी, हैदराबाद से पिछले 50 वर्षों से निरंतर प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'संकल्य' के लगभग दो दशक से प्रधान संपादक के रूप में निःशुल्क सेवा देने वाले प्रो. मोहन सिंह जी की कमी 'संकल्य' परिवार को अवश्य खलेगी। 'संकल्य' परिवार के लिए प्रो. मोहन सिंह जी का चले जाना एक अपूरणीय क्षति है। स्मृति शेष प्रो. टी. मोहन सिंह जी की आत्मा को चिर शांति मिले यह ईश्वर से प्रार्थना करते हुए 'संकल्य' परिवार उन्हें अश्रुल श्रद्धांजलि अर्पित करता है...

ISSN : 2277-9264

यू. जी. सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल

मधुसूदन चतुर्वेदी, प्रो. बैजनाथ चतुर्वेदी, प्रो. वसंत चक्रवर्ती कीर्ति स्तंभ

स्थापना वर्ष : 1956

संकल्य

त्रैमासिक

(संयुक्तांक) वर्ष : 51 : अंक–1 एवं 2, जनवरी–मार्च एवं अप्रैल–जून, 2023

प्रधान संपादक
प्रो. टी. मोहन सिंह
अध्यक्ष : हिंदी अकादमी, हैदराबाद

प्रेरणास्रोत
विवेकी राय

संपादक
डॉ. गोरखनाथ तिवारी
डॉ. शशिकांत मिश्र

परामर्शदाता मंडल

प्रो. टी. आर. भट्ट
प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल
प्रो. दिलीप सिंह
प्रो. तेजस्वी कट्टीमनी
प्रो. आर. एस. सर्राजु
प्रो. नंद किशोर पांडेय
प्रो. शुभदा वांजपे
प्रो. जयंत कर शर्मा
श्री ओम धीरज
श्री रूद्रनाथ मिश्र
डॉ. राजनारायण अवस्थी

प्रकाशक
डॉ. गोरखनाथ तिवारी
सचिव : हिंदी अकादमी, हैदराबाद

सम्मानीय संरक्षक

श्री राजेश्वर तिवारी, आई.ए.एस.
श्री लाल जी राय, आई.ए.एस.
श्री जितेंद्र रेड्डी, पूर्व संसद सदस्य
प्रो. आर. के. मिश्रा (विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री)

सुश्री कविता ठाकुर, कानूनी सलाहकार
रेखा तिवारी, प्रबंध संपादक

संपादकीय कार्यालय

प्लॉट नं. 10, रोड नं. 6, समतापुरी कॉलोनी
न्यू नागोल के पास, हैदराबाद– 500 035 (तेलंगाना)

संकल्य (त्रैमासिक)

- प्रकाशित सामग्री की रीति–नीति या विचारों से **हिंदी अकादमी, हैदराबाद** या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।
- **'संकल्य'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल हैदराबाद न्यायालय के अधीन होंगे।

शुल्क भेजने का पता :

मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट **हिंदी अकादमी** के नाम
सचिव : डॉ. गोरखनाथ तिवारी
फ्लैट नं. 258/ए, ब्लॉक नं.11, तीसरी मंजिल,
जनप्रिया टाउनशिप, मल्लापुर
हैदराबाद– 500 076 (तेलंगाना), ई–मेल : **hindiakadami@gmail.com**
फोन : 09441017160/9032117105

ऑनलाइन संकल्य की सदस्यता शुल्क भेजने हेतु पृष्ठ 50 पर बैंक डिटेल देखें।

मूल्य :

विशेषांक एक अंक का मूल्य रु. 200/–
वार्षिक : रु.500/–, **आजीवन :** रु.5,100/– (व्यक्तिगत),
संस्थागत आजीवन : रु.7,500/–, संस्थाओं के लिए : **वार्षिक** : रु. 800/–,
संरक्षक सदस्यता शुल्क : रु.7,500/– (आजीवन)

आवरण चित्र

- **सुरभि राय,** चित्रकार
- **प्रमोद कुमार मणि त्रिपाठी,** प्रूफ रीडर

मुद्रक :

कर्षक आर्ट प्रिंटर्स
40–ए.पी.एच.बी.
विद्यानगर, हैदराबाद–500 044
फोन : 040–27618261, 27653348

संकल्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु Kruti Dev 010 या Unicode Mangal फ़ांट में सामग्री टाइप करवाकर ई–मेल : hindiakadami@gmail.com पर भेजें।

ISSN 2277-9264/यू. जी. सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल RNI No. 25388/74

संकल्य त्रैमासिक

(संयुक्तांक) वर्ष : 51 : अंक–1 एवं 2, जनवरी–मार्च एवं अप्रैल–जून, 2023

अनुक्रम Contents

संपादकीय

फिजी से 'कृत्रिम मेधा' का संदेश..... : प्रो. टी. मोहन सिंह 05

साक्षात्कार

हिंदी के शिखर पुरुष प्रो. चक्रधर त्रिपाठी के साथ डॉ. गोरखनाथ तिवारी की विशेष बातचीत : 07

आलेख

1. 'नई नारी' को जन्म देने वाली फकीरमोहन सेनापति की कहानी 'रेवती' : प्रो. जयंत कर शर्मा 13
2. 21वीं सदी में भारतीय प्रवासी और उनके साहित्य : अमित कुमार गुप्ता एवं रजनी बाला 21
3. हिंदी की स्त्रीवादी कविता का सौंदर्यबोधीय परिदृश्य : डॉ. अमिय कुमार साहु 27
4. निर्मल वर्मा की कहानियाँ : स्वरूप एवं संवेदना : प्रो. अखिलेश कुमार शंखधर एवं डॉ.लाङ्जम रोमी देवी 34
5. अरूणाचल प्रदेश के गुमनामी स्वतंत्रता सेनानी : डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र 39
6. भाषा के प्रचार–प्रसार में पत्रकारिता का योगदान : एक अध्ययन : सुरेंद्र कुमार 45
7. हिंदी दलित कविता में अंबेडकरवादी चेतना : सोनटके गौतम 51
8. नासिरा शर्मा की 'मेरी प्रिय कहानियाँ' में चित्रित सामाजिक परिवेश : डॉ. पठान रहीम खान 54
9. एबीसीडी उपन्यास में सांस्कृतिक संघर्ष : विनोद बाबुराव मेघशाम 61
10. प्रवासी हिंदी साहित्य में चित्रित नस्लभेद : प्रियदर्शिनी बारिक 67
11. 'टोपी शुक्ला' में चित्रित साझी संस्कृति : साहिबा खातूऩ 71
12. हिंदी कहानियों में कामकाजी नारी की समस्याएँ : आलिया परवीन एस. कलकेरी 77
13. गिलिग्डु में चित्रित वृद्ध जीवन संघर्ष : डॉ. रेणुका बालेहोसुर 80

14.	उषा प्रियंवदा का कथा साहित्य : स्त्री मुक्ति का आख्यान	: डॉ. किरण तिवारी	87
15.	गीता में योग का स्वरूप : एक अध्ययन	: अजय चौधरी एवं डॉ. नितिन घोमने	95
16.	श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञान, कर्म व भक्तियोग की उपादेयता	: वीना रानी	104
17.	वैदिक वाङ्मय में नारी एवं स्वास्थ्य : एक विवेचनात्मक अध्ययन	: सुनीता देवी	111
18.	डॉ. शिवबहादुर सिंह भदौरिया का काव्य संसार	: डॉ. रत्नेश कुमार यादव एवं अमन वर्मा	115
19.	समकालीन हिंदी स्त्रीवादी कहानियों में नारी–विमर्श	: डॉ. सी. संगीता	119
20.	हिंदी दलित कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन	: डॉ. अजय कुमार	123
21.	समकालीन कहानियों में स्त्री–पुरुष	: डॉ. शकीला बेगम मुस्तफा	126
22.	रूपनारायण सोनकर की कहानियों में चित्रित दलित अस्मिता	: डॉ. दोड्डा शेषु बाबु	130
23.	हिसार में सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी विकास	: सुनीता	135
24.	हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ	: डॉ. बसवराज के. बारकेर	141
25.	कोरोना काल में लोगों की मीडिया आदतों में परिवर्तन का अध्ययन	: डॉ. सुरेश कुमार	144
26.	बामसेफ संगठन : गठन, स्थापना और विकास	: अशोक कुमार	150

कहानी

27.	लगन	: डॉ. शशिकांत मिश्र	155

संपादकीय

फिजी से 'कृत्रिम मेधा' का संदेश........

फिजी के नादी शहर के देनाराऊ आइलैंड कन्वेंशन सेंटर में 15 से 17 फरवरी 2023 तक आयोजित 12वें विश्व हिंदी सम्मलेन वैश्विक इतिहास में एक स्वर्णिम पृष्ठ बन गया। साथ ही 1948 में स्थापित हुए भारत और फिजी के राजनयिक संबंध को और सुदृढ़ता मिली। सच्चाई तो यह है कि फिजी के साथ भारत का एक विशेष संबंध शताब्दी पूर्व रहा है। इतिहास साक्षी है कि 143 वर्ष पहले भारत से एक संविदा के तहत हजारों श्रमिकों को फिजी ले जाया गया था। आज उन हिंदुस्तानियों की तीसरी, चौथी व पाँचवीं पीढियाँ वहाँ रहती हैं, जो अपनी भारतीय विरासत पर गर्व करती हैं। वे अपनी भाषा व संस्कृति के प्रति समर्पित हैं। फिजी में विश्व हिंदी सम्मलेन का आयोजन उन पूर्वजों के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि है, जिनके कारण हिंदी ने फिजी में अपना स्थान बना लिया है। विश्व हिंदी सम्मलेन की संकल्पना हिंदी को भावनात्मक धरातल से उठाकर व्यापक स्वरुप प्रदान करने के लिए की गई है। 12वें विश्व हिंदी सम्मलेन की थीम "हिंदी—पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक" रखी गयी थी। इसमें जहाँ एक ओर हम अपनी परंपरा और प्राचीन ज्ञान के प्रति सम्मान दर्शा रहे हैं, वहीं दुनिया को यह बताना चाहते हैं कि हिंदी केवल साहित्य की भाषा नहीं, बल्कि आधुनिक ज्ञान—विज्ञान के साथ चलने और नई तकनीकी से कदम मिलाने में सक्षम भाषा है। यह विश्व हिंदी सम्मेलन दुनिया भर के हिंदी प्रेमियों, हिंदी सेवियों, हिंदी विद्वानों और लेखकों को हिंदी की दशा—दिशा पर विचार करने का एक मंच प्रदान करता है।

ज्ञात रहे कि हिंदी न सिर्फ भारत की सबसे प्रमुख संपर्क भाषा है, बल्कि यह विदेशों में भारतीयों की पहचान से भी जुड़ी है। हिंदी भारत की महान संस्कृति की संवाहिका ही नहीं, आज **'विश्वबंधुत्व' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्'** जैसे भारतीय दर्शन को समग्र विश्व में फैलाने का काम करती है। हमारी गौरवशाली संस्कृति व संस्कारों को तकनीकी के वर्तमान दौर में विभिन्न माध्यमों से दुनिया के हर हिस्से में पहुँचाने में हिंदी का अहम् योगदान रहा है। फिजी में हिंदी की स्थिति इस तथ्य का स्पष्ट प्रमाण है। 1879 ई. में भारतीय श्रमिकों के साथ फिजी पहुँची हिंदी आज वहाँ की आधिकारिक भाषाओं में शामिल है। विश्व हिंदी सम्मेलन में भारत और फिजी सहित विश्व के अन्य देशों के प्रतिनिधियों ने प्रतिवेदन में इस सम्मलेन को सफल बताते हुए इस बात पर सहमति जतायी कि कृत्रिम मेधा जैसी आधुनिक सूचना, ज्ञान एवं अनुसंधान की तकनीक का हिंदी के माध्यम से प्रयोग करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा और अन्य पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को विश्व की बहुत बड़ी जनसंख्या तक पहुँचाया जा सकता है। प्रतिवेदन में यह भी कहा गया कि प्रतिस्पर्धा पर आधारित विश्व व्यवस्था को सहकार, समावेशन और सह—अस्तित्व पर आधारित वैकल्पिक दृष्टि प्रदान करने में हिंदी एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर

सकती है। इसमें यह भी कहा गया कि **'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** के आधार पर अंतरराष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वैश्विक बाजार का निर्माण किया जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी एवं कृत्रिम मेधा जैसी आधुनिक ज्ञान प्रणालियों का समुचित उपयोग करते हुए हिंदी मीडिया, सिनेमा और जनसंचार के विविध नए माध्यमों ने हिंदी को विश्व–भाषा के रूप में विस्तारित करने की नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं। हिंदी भाषा को पारंपरिक प्रयोजनों से अधिक आधुनिक प्रयोजनों के लिए तैयार करना ही भाषिक आधुनिकीकरण है और इस प्रकार के सम्मेलनों का उद्देश्य भी यही होता है। 'कृत्रिम मेधा' का अर्थ तकनीक की उस शक्ति से है, जिसका प्रयोग करते हुए वह न सिर्फ इंसानों की तरह, बल्कि अपेक्षाकृत बहुत बड़े पैमाने पर सीख सकती हैं, व्यापक स्तर पर आँकड़ों का विश्लेषण कर सकती है, भिन्न–भिन्न परिस्थितियों का मंथन कर सकती है, अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर सकती है, निर्णय ले सकती है और परिणाम दे सकती है। कृत्रिम मेधा ने यह संभव कर दिखाया है कि कोई एक भाषा जानने पर भी आप सब भाषा–भाषियों के बीच संवाद, कारोबार कर सकते हैं। हिंदी प्रयोक्ताओं की संख्या ही आज इस भाषा की सबसे बड़ी शक्ति है, जो अंतरराष्ट्रीय कारोबार में हिंदी को हमेशा केंद्रीय भूमिका में रखेगी। भारत में कृत्रिम मेधा से संचालित जनोन्मुखी प्रणालियों के लिए हिंदी व भारतीय भाषाएँ सबसे उपयुक्त विकल्प हैं। कृत्रिम मेधा हमारी पूर्व की गतिविधियों के आधार पर हमारी पसंद या नापसंद का सहज अनुमान लगा लेती है। कृत्रिम मेधा पूर्व के अनुभवों, व्यवहार विश्लेषण और पैटर्न की पहचान के द्वारा एक विशिष्ट अल्गोरिद्म पर कार्य करती है। अतएव वेब पर हिंदी का जितना अधिक कंटेंट होगा, कृत्रिम मेधा के साथ हिंदी उतने ही प्रभावी तरीके से कार्य करेगी। भारत में कृत्रिम मेधा का भविष्य सूचना ज्ञान और आँकड़ों पर आधारित है और इनके उपयोग में हिंदी की भूमिका सिद्ध है।

आगे आनेवाली पीढ़ी यह जानें कि हिंदी एक सशक्त भाषा है और कृत्रिम मेधा के साथ कदमताल करने में समर्थ है। ज्ञान–विज्ञान के सभी नए पहलुओं पर कार्य करने का माध्यम भी हिंदी किसी की राह में वाधा नहीं है। यह तो प्रगति पथ पर अग्रसर करनेवाली शक्ति है। आज हमारे पास हिंदी से संचालित एलेक्सा तथा अन्य स्वचालित मशीनें हैं, रोबोट हैं, चैटबॉट है, जो हिंदी भाषा समझते हैं। वर्तमान समय में भाषाओं के विकास उसके संचार के लिए कृत्रिम मेधा का साथ समय की माँग है। किसी भी भाषा को जीवित रखने के लिए उसे भावी पीढ़ी को सौंपना सबसे ज्यादा जरूरी है। यह तभी संभव है, जब हम उसे तकनीकी व प्रौद्योगिकी के साथ कदमताल करने में सक्षम बनाएँ।

भारत ने दुनिया को गिनना सिखाया है। आत्मनिर्भरता के स्तर पर भारत को आगे बढ़ना है तो पारंपरिक ज्ञान बहुत आवश्यक है। प्राचीन ज्ञान को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की जरूरत है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी इसकी बात कही गई है। भारतीय ज्ञान परंपरा को आज के संदर्भ में ढालने की जरूरत है।

प्रो. टी. मोहन सिंह
प्रधान संपादक